3

ESSAY

Time : 3 Hours] [Full Marks : 300

Section – I

खण्ड – I

Write an essay on **any one** of the following topics in about 700 to 800 words : 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 700 से 800 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए :

1. ☐ Importance of India in contemporary global perspective.
समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की महत्ता ।

2. ☐ Country development and information technology.
देश का विकास और सूचना प्रौद्योगिकी ।

3. ☑ Environmental imbalance is the destroyer of creation.
पर्यावरण असन्तुलन सृष्टि का विनाशक है ।

4. ☐ Soil conservation and organic farming.
भूमि संरक्षण और जैविक खेती ।

पर्यावरण असंतुलन सृष्टि का विनाशक है।

धूप का जंगल नंगे पाँव, इक बंजारा करता क्या,
रेत का दरिया रेत के झरने, प्यास का मारा करता क्या?
बादल बादल आग लगी है, छाया तरसे छाया को,
पत्ते पत्ते सूख चुके हैं वृक्ष बेचारा करता क्या;

— अंसार कंबरी

अंसार कंबरी जी कि

उपर्युक्त पंक्तियाँ पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न भयावह परिणामों के बारे में मनुष्य को सचेत करती प्रतीत होती हैं। यदि पर्यावरण असंतुलित हो गया तो किस प्रकार मातृभूमि की गोद में पल रहे मानव जगत को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसका मार्मिक वर्णन अंसार कंबरी जी करते हैं।

चर्चा विस्तार से पूर्व युक्तिसंगत होगा कि हम पर्यावरण का तात्पर्य समझ लें। आई. यू. सी. एन (IUCN) के अनुसार हमारे चारों तरफ विस्तृत भूमण्डल, वायुमण्डल तथा जलमण्डल का सम्मीलित आवरण ही पर्यावरण है। मानव जगत, जीव जन्तु, वनस्पतियाँ, वृक्ष वायु, सूक्ष्मजीव, जलीय जीव आदि पर्यावरण

के अंग हैं। पर्यावरण को समझने के पश्चात हमें पर्यावरण असंतुलन को समझना चाहिए।

पर्यावरण असंतुलन से तात्पर्य सामान्य पर्यावरणीय दशाओं में होने वाले परिवर्तन से हैं। वर्तमान परिदृश्य में (IPCC) आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट बताती है कि 1950 के दशक की तुलना में वर्तमान दशक 1.2°C अधिक गर्म रहा है, नेचर जनरल पत्रिका के मुताबिक वर्ष 2023 का वर्ष अभी तक का सबसे अधिक गर्म वर्ष रहा है। यह स्वयं में पर्यावरण असंतुलन का उदाहरण हैं। भारत के संदर्भ में बात करें तो भारतीय मौसम विज्ञान के अनुसार 1950-1981 के दौर की तुलना में 2010-2023 के दौर में हीटवेव व सूखे की घटनाओं में 74% की वृद्धि तथा सामान्य से अधिक वर्षा में 27% की वृद्धि हुई है।

बेंगलौर में, लंदन में, कैलिफोर्निया में हीटवेव से होने वाली मृत्यु की घटनाएँ हों, या सऊदी अरब के रेगिस्तान के क्षेत्र में बाढ़ की घटनाएँ या फिर अमेरिका, आस्ट्रेलिया एवं ब्राजील के हरे भरे जंगलों में आग की भयावह घटनाएँ ही क्यों न हो सभी पर्यावरणीय असंतुलन को ही संदर्भित करती हैं।

यदि हम पर्यावरणीय असंतुलन के पीछे के कारकों की विवेचना करें तो हम देखते हैं मानव जीवन के प्रारम्भ से ही मानव प्रकृति की गोद में अपना विकास संतुलित तरीके से करता रहा है, कभी आग की खोज ने तो कभी लोहे के आविष्कार से उपजी कुल्हाड़ी आदि ने समय-समय पर पर्यावरण को क्षति पहुँचाई है परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के नुकसानों ने पर्यावरण एवं पृथ्वी

अप्रयुक्त स्थान को क्रॉस (x) करें
Please Cross (x) unused space

की सहनशीलता को समाप्त कर दिया और पर्यावरणीय दशाओं में परिवर्तन दृष्टिगत हुआ।
औद्योगिक क्रांति के बाद उपजा उपभोक्तावाद, भौतिकतावाद आदि के कारण संसाधनों के अत्यधिक दोहन को बढ़ावा मिला। जीवाश्म ईंधनों, ऊर्जा अपशिष्ट, औद्योगीकरण से उत्पन्न रसायनों आदि ने ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन किया परिणाम स्वरूप वैश्विक तापन की घटना उत्पन्न हुई।

वैश्विक तापन ने हिमस्खलन एवं ग्लेशियर के पिघलने को बढ़ावा दिया जिससे नदियों में बाढ़ के साथ-साथ पृथ्वी का ऊष्मा बजट भी प्रभावित हुआ। आधुनिक ऊर्जा वाहन से निकलने वाले धुओं ने मानव व जीव जगत को साँस लेना दुश्वार कर दिया है।

पर्यावरण असंतुलन के कारकों को समझ लेने के पश्चात हमें यह समझना चाहिए कि पर्यावरण असंतुलन सृष्टि

हेतु विनाशक कैसे है? यहाँ हमें राहिला ओरैम साईन की पंक्ति याद आती है –

"आखिरी वृक्ष के कट जाने के बाद
आखिरी नदी के सूख जाने के बाद
आखिरी मछली का शिकार हो जाने के बाद
आखिरकार मनुष्य यह समझेगा कि पैसा
खाया नहीं जा सकता है।"

यदि विनाशक परिणामों की बात करें तो आई. पी. सी. सी. द्वारा जारी 6वीं रिपोर्ट आँख खोलने वाले साक्ष्य प्रस्तुत करती है। इसके अनुसार वर्तमान में समस्त जीव जन्तु 6 वें सामूहिक विलोपन का सामना कर रहे हैं। चाहे व्हेल मछली, टाइगर, तितलियों, मधुमक्खियों आदि की संख्या में तीव्र गिरावट हो या जैव विविधता का तीव्र ह्रास यह पर्यावरण असंतुलन का परिणाम है।

अप्रयुक्त स्थान को क्रॉस (x) कर दें
Please Cross (x) unused space

पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न विपदा एवं सृष्टि विनाशक का गवाह हमारा स्वयं का इतिहास भी रहा है। हड़प्पा जैसी ६ हजार वर्ष पुरानी परम्परा यदि समय के काल में खो गई तो इतिहासकार एवं जलवायु विज्ञानी पर्यावरण असंतुलन को ही जिम्मेदार मानते हैं।

यदि सामाजिक प्रभावों पर पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न संकटों पर दृष्टिपात करें तो बाढ़, सूखा के कारण जहाँ महिलाओं पर जल, भोजन ईंधन हेतु अधिक संघर्ष करना पड़ता है वहीं एन.सी.आर.बी की रिपोर्ट महिलाओं के प्रति हिंसा में वृद्धि को भी जलवायु परिवर्तन को जिम्मेदार मानती है।

इसी प्रकार आर्थिक स्तर पर जलव

व पर्यावरण के असंतुलन ने कृषि को सूखा एवं बाढ़ की चपेट में लाया है। अल नीनो एवं ला नीना का प्रभाव जगजाहिर है। हीटवेव ने मानव के कार्य के घण्टों एवं कार्य दक्षता में कमी की है।

यदि राजनीतिक प्रभावों पर दृष्टि डालें तो सिंधु जल को लेकर भारत - पाकिस्तान विवाद हो या ब्रह्मपुत्र नदी को लेकर भारत व चीन विवाद या फिर कावेरी नदी को लेकर केरल व तमिलनाडु के मध्य संघर्ष क्यों न हो सभी ने हिंसक संघर्ष की संभावनाओं को तीव्र किया है। जनजातियों की जल जंगल एवं जमीन की लड़ाई को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

अप्रयुक्त स्थान को क्रॉस (x) कर दें।
Please Cross (x) unused space

पर्यावरण असंतुलन सृष्टि हेतु विनाशकारी
है तो इसके पीछे सर्वाधिक उत्तरदायी
पर्यावरणीय प्रभाव हैं। चाहे समुद्री
जलस्तर के कारण इंडोनेशिया द्वारा
राजधानी सुमात्रा से बदलकर नुसंतारा
करना हो या समुद्र में डूबने की
कगार पर खड़े मारीशस, मालदीव,
गैलापगोस आदि द्वीप हो ये सभी
उदाहरण विनाशकारी परिणामों को दर्शाते हैं।

बर्फीले क्षेत्रों में ध्रुवीय
भालुओं की घटती संख्या हो या रेगिस्तानी
क्षेत्र में पक्षियों की कमी या फिर
उत्तराखण्ड एवं सिक्किम में ग्लेशियल
लेक आउटबर्स्ट से आई बाढ़ ही क्यों
न हो सभी पर्यावरणीय असंतुलन के
ही परिणाम हैं।

इन्हीं विनाशात्मक परिणामों
के मद्देनजर बान ब्राउन ने कहा था

कि
"पृथ्वी का भविष्य या तो हरा होगा या होगा ही नहीं।"

हाल के दिनों में राजस्थान में टिड्डियों का हमला हो या डेंगू, ज्वर, कोविड-19 आदि वायरस व रोगाणु जनक बीमारियाँ इन सभी के पीछे पर्यावरण असंतुलन उत्तरदायी है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि पर्यावरण असंतुलन सृष्टि विनाशक है तो इस हेतु मानव सभ्यता द्वारा उपाय क्या किये जा रहे हैं?

पृथ्वी सम्मेलन हो या पेरिस सम्मेलन, माण्ट्रियल प्रोटोकाल हो या क्योटो प्रोटोकाल, हरित

अप्रयुक्त स्थान को क्रॉस (x) कर दें
Please Cross (x) unused space

विकास लक्ष्य हों या सतत विकास की अवधारणा ये सभी प्रयास पर्यावरण असंतुलन को दूर करने हेतु किये जा रहे हैं।

यदि भारत के संदर्भ में देखें तो पंचामृत घोषणा, जलवायु परिवर्तन हेतु 8 कार्य योजना, INDC लक्ष्य, मिशन लाइफ के द्वारा पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली अपनाना तथा फेम योजना द्वारा ई-वाहनों का विकास तथा वन नीति 1988 में हरित पर्यावरण हेतु भारत भूमि के 33% भाग को वनीकरण से युक्त करने का लक्ष्य सभी पर्यावरण असंतुलन की समस्या से निजात पाने हेतु किये गए प्रयास हैं।

सृष्टि को विनाश से बचाने हेतु गाँधी जी के कथन को आत्मसात करना होगा -

पृथ्वी समस्त मनुष्य के आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है किन्तु लालच की नहीं।

हमें हरित विकास को बढ़ावा देना होगा, रसायनों का कम प्रयोग करना होगा तथा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर अधिक जोर देकर पृथ्वी को चिड़ियों की आवाजें, मछलियों की किलकारियों तथा सिंहो की दहाड़ो व हाथियों की आवाजों से युक्त करना होगा।

अप्रयुक्त स्थान को क्रॉस (x) कर दें
Please Cross (x) unused space

हमें विनाश से बचना है तो उस अमेरिकी कहावत को चरितार्थ करना होगा जिसमें कहा गया है कि-

"हमें यह ग्रह अधिकार में नहीं मिला है हमने इसे आने वाली पीढ़ियों से उधार लिया है।"

अतः हमें सतत विकास लक्ष्यों 2030 की प्राप्ति की दिशा में प्रयासरत रहना होगा इसी में वसुधा एवं इस पर निवासित जीव जगत का कल्याण निहित है।

बनाओ मकां तो आँगन में एक पेड़ भी लगाना
परिंदे सारे गाँव के चहचहाएंगे।

o —— o ——